अमूर्त शिल्पी

मुनि क्षमासागर

अमूर्त शिल्पी
मुनि क्षमासागर

सं-अर्पण, अर्थात सम्यक प्रकार से अर्पण कर देना... स्वयं को... गुरु में।
ऐसा कि किंचित भी निजता न रही...सब तन्मय हो गया. और जब वैसा भाव प्रकट हुआ तो कितने ही कष्ट आये, पर कुछ कष्ट न दे पाए।
और जब वह समर्पण स्व-भाव हो जाये, फिर गुरु और भगवान् भी एक ही हैं..."
जो ज्योति सा मेरे हृदय में प्रेम भरता रहा...वह देवता..."

मुनि क्षमासागर (20 सितम्बर 1957) ने 10 जनवरी 1980 को नैनागिरि में क्षुल्लक दीक्षा, ऐलक दीक्षा 7 नवम्बर 1980 (मुक्तागिरि) और मुनि दीक्षा : 20 अगस्त 1982 में प्राप्त की। आपके दीक्षा गुरू संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी रहे। मुनिश्री ने 13 मार्च 2015 को समाधि ग्रहण की। श्री क्षमासागर जी महाराज के न केवल प्रवचन बल्कि लेखन भी संपूर्ण समाज को विलक्षण तरीके से सात्विक और समर्थ जीवन जीने का मार्ग दिखाता है।
आपकी कुछ प्रमुख कृतियाँ: संस्मरण/संग्रह: 1. आत्मान्वेषी, 2. अमूर्त शिल्पी', 3. कौशल्या के राम, 4. यशोदा के कन्हैया।
5. In Quest of the self (Bhartiya Jnapith)
प्रवचन संग्रह : 1. कर्म कैसे करें, 2. जीवन के अनसुलझे प्रश्न, 3. गुरुवाणी (दशलक्षण पर्व), 4. गुरुवाणी (बारह भावना), 5. सोलह कारण भावना, 6. गुरुवाणी (तत्वार्थ सूत्र), 7. भक्ति अँजुरी (भारतीय ज्ञानपीठ), 8. पूजा कैसे करें 9. बेहतर जीवन के उपाय (श्रावक की ग्यारह प्रतिमायें), 10. शंका समाधान 1 एवं 2 11. संबंधों का विज्ञान 12. Mind Your Karma, Mend Your Life (Jain Publishing California, Bhartiya Jnapith) 13. सामायिक कैसे करें 14. सल्लेखना
काव्य संग्रह : 1. पगडण्डी सूरज तक, 2. मुनि क्षमासागर की कवितायें, 3. अपना घर 4. मुक्ति 5. मैं तुम्हारा हूँ, 6. चिड़िया लौट आई है 7. शिवालय के सोपान 8. और-और अपना।
अनुवाद : एकीभाव स्तोत्र, शब्दकोषः जैन पारिभाषिक शब्दकोष, संकलन : प्रवचन पारिजात
प्रेरणा : आस्था और अन्वेषण,जीवन क्या है?, ABC Of Jainism ,My Musings (मेरी भावना), जिन पूजा (Mini Book Of Worship), अनदेखा सच (Facts About Veg & Non-Veg. Restaurant), Self-Enlightenment (Translation Of Chhahdhala), पहला कदम, दूसरा कदम, तीसरा कदम, सामाजिक एकता के चार सूत्र, प्रवचन पर्व', द्रव्य संग्रह।

Online Bookstore on amazon flipkart.com
प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग इंडिया

NON FICTION
ISBN 978-81-970511-3-5
ISBN 978-81-970511-3-5
9 788197 051135
₹ 180/- I Pravasi Prem Publishing, India

अमूर्त-शिल्पी

अमूर्त-शिल्पी

मुनि क्षमासागर

प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, भारत

ISBN 978-81-970511-3-5

पहला संस्करण : 2024 (*शक* 1945)

© मैत्री समूह

Amurta Shilpi (*Hindi Original*)

₹ 180.00

प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, भारत

3/186 राजेंद्र नगर, सेक्टर-2, साहिबाबाद,
गाजियाबाद–201005 द्वारा प्रकाशित।

टाईपसेटिंग - **नूतन ग्राफिक्स,** साहिबाबाद, मो. 9891459346

www.pppublishingindia.press

अनुक्रम

	समर्पण	ix
	अमूर्त-शिल्पी	xii
1.	वीतरागता का स्पर्श	1
2.	असाता का उदय	5
3.	अतिथि	6
4.	समताभाव	7
5.	निर्भयता	9
6.	ज्ञान का अहंकार	10
7.	प्रकृति-प्रेम	12
8.	प्रथम-दर्शन	13
9.	हींग की डिब्बी में केसर	15
10.	निर्दोषचर्या	17
11.	रत्नाकर	20
12.	तपस्या-भेद-ज्ञानपूर्वक	22
13.	साधु-संगति	24
14.	मुक्ति का अतिरिक्त उपाय	26
15.	अन्तर्यात्री	27
16.	आत्म-सूर्य	29
17.	तप-विनय	30
18.	परीषह-विजय	31
19.	अंतर्बोध	32
20.	स्वसमय	34

21. वीतरागता 37
22. कायक्लेश तप 38
23. पावन संदेश 39
24. अभय-दान 41
25. आशीर्वाद का फल 43
26. सच्चा रास्ता 44
27. सजगता 46
28. संथारा 49
29. निर्ग्रन्थ 50
30. अध्ययन की ललक 52
31. उपाधि 54
32. आधि-व्याधि 55
33. निर्मलता 56
34. असीम वात्सल्य 57
35. समाधान 58
36. ज्ञान के प्रति विनय 59
37. मुक्ति 61
38. श्रेष्ठ साधना 62
39. व्यवहार-कुशलता 64
40. आत्मीयता 65
41. अनुकंपा 66
42. सच्चा अनुग्रह 67
43. प्रकर्त्ता 68
44. कर्तव्य-बोध 69
45. आत्मानुशासन 70
46. अनुशासन का पाठ 72

47. स्थितिकरण 73
48. त्याग की महत्ता 74
49. निमित्त 75
50. आत्मविश्वास 76
51. समत्व की साधना 78
52. दृढ़ संकल्प 79
53. परीक्षा 81
54. परम समीप 83
55. कर्तव्य की प्रेरणा 84
56. सदभाव 85
57. वीतरागी से अनुराग 87
58. दूरदर्शिता 89
59. आत्मीयता 91
60. तितिक्षा 92
61. वीतरागता 94
62. आत्म-बोध 96
63. विनम्र श्रद्धा 98
64. अनुशासन 99
65. शिष्टाचार 100
66. अनुभूति 101
67. आत्म-ध्यान 102
68. विचार 103

जो ज्योति-सा मेरे हृदय में रोशनी भरता रहा।
वह देवता
जो साँस बन इस देह में आता रहा जाता रहा।
वह देवता
जो दूर रह कर भी सदा से साथ मेरे है।
यही अहसास देता रहा।
वह देवता
मैं जागता हूँ
या नहीं
यह देखने
द्वार पर मेरे दस्तक सदा
देता रहा।
वह देवता
जो गति मेरी नियति था।
ठीक मुझ-सा ही मुझे करता रहा।
वह देवता।
जो ज्योति-सा मेरे हृदय में रोशनी भरता रहा।
वह देवता

— मुनि क्षमासागर जी

समर्पण

दैनंदिनी में उपयोग आने वाले इस साधारण से लगने वाले शब्द के मायने बहुत गहन और दुर्गम्य हैं। इतने कि जो लोग इस शब्द को गुण रूप धारण करते हैं, वे लोकोत्तर से प्रतीत होने लगते हैं। उनका आचरण एवं विचार अस्वाभाविक-सा प्रतीत होता है।

सम्यक मार्ग में हेतु प्रणीत, ऐसे पुरुष संख्या में अत्यंत विरल और समय-चक्र में बहुत अंतराल से उत्पन्न होते हैं। इस शब्द का परिचय इसे जीने वाले के साथ रहकर ही समझा जा सकता है। वह अनुभूतिगम्य है। मुनिश्री क्षमासागर जी को निकट से पहचानने वाले जन, उनके इस गुण से सदैव अचंभित और अभिभूत रहे। वह समर्पण एक अलग ही कोटि का रहा।

उनके प्रवचनों में, उनके लेखन में, उनसे की गई चर्चाओं में ऐसा लगता था जैसे उन्होंने गुरु महाराज विद्यासागर जी का कोई चश्मा ही पहन रखा हो। सदैव उसी के लेंस से वे देखते थे .... बोलते थे. गुरु प्रसंग आने पर उनका वह गदगद भाव, कुछ अलग ही किस्म का हुआ करता था। रुँधा गला और सजल नेत्र उस समर्पण और श्रद्धा भाव को प्रकट करने की चेष्टा करते से करते जान पड़ते थे।

गुरूजी के प्रति उनके मनोभावों को उनकी लेखनी ने भली प्रकार से व्यक्त करने का काम किया है। लेखनी की भावाव्यक्ति की सीमाएँ है, परंतु जितना कुछ वह लेखनी कहती है, हमारे लिए वह भी अपरिमित-सा है। आचार्यश्री के प्रथम दर्शन जिस दिन मिले, उसका वर्णन करते समय मुनिश्री कह रहे हैं .....

".....दर्शन तो भीतर से ही संभव है, बाहर से दर्शन नहीं हो पाता, पर भीतर पहुँचना आसान भी नहीं था। दरवाजे पर बहुत भीड़ थी, पर मैं स्वयं भी तो भीड़ से घिरा था....."

और ...